CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper

Received on 12.09.2022
Reviewed on 19.09.2022
Accepted on 20.09.2022

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन

* डॉ. रचना बडोलिया
** डॉ. अरशी अब्बासी

मुख्य शब्द– *सांवेगिक बुद्धि, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, कार्यकुशलता आदि।*

सार-संक्षेप

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविदयालयों के प्रशिक्षकों की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना हैं। चूंकी सांवेगिक बुद्धि द्वारा विशिष्ट परिस्थितियों में प्रतिक्रिया करने की समझ विकसित होती हैं। इसे जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में अधिकतम लाभ प्राप्त करने हेतु संवेगों का उपयोग करने वाली संज्ञानात्मक योग्यताओं का समूह माना जाता हैं। संवेगात्मक बुद्धि कार्यस्थल पर सफलता निर्धारित करती हैं, साथ ही कार्यकुशलता में वुद्धि करने के साथ उपयुक्त प्रतिक्रिया करने की समझ विकसित करती हैं। उच्च सांवेगिक बुद्धि युक्त शिक्षक प्रत्येक परिस्थिति में स्वंय को समायोजित कर लेते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में कोटा शहर के 200 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों कि प्रशिक्षकों का चयन किया गया हैं तथा स्वनिर्मित व मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा आंकडो का संग्रहण किया गया। अध्ययन से प्राप्त परिणामो से ज्ञात होता हैं कि सांवेगिक बुद्धि शिक्षक की वह क्षमता हो जो उसकी कार्यकुशलता को प्रदर्शित करती हैं। अतः कहा जा सकता हैं कि सांवेगिक बुद्धि और कार्यकुशलता में धनात्मक सहसंबंध होता हैं।

प्रस्तावना

क्रोध, द्ववति सम्मोहः सम्मोहास्मृतिविभ्रय

स्मृति यृशाद बुद्धिनाशो बुद्धि नाशाप्रणश्यति।

अर्थात क्रोध से अत्यंत मूलभाव उत्पन्न हो जाता हैं और मूलभाव में स्मृति में भ्रम हो जाता हैं अर्थात ज्ञान शक्ति का नाश हो जाता है, और बुद्धि का नाश हो जाने से पुरूष अपनी स्थति से गिर जाता हैं। अर्थात् हम कह सकते हैं कि संवेगो का भलीभाति

नियंत्रण एवं पहचान ही सांवेगिक बुद्धि कहलाता हैं चूंकि आज सामाजिक क्रांति और सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा सबसे शक्तिशाली उपकरण हैं। यह राष्ट्रीय विकास की रीढ है औपचारिक शिक्षा की प्रत्येक प्रणाली में शिक्षक एक महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं।

धुल एवं मंगल के अनुसार'' एक संवेगात्मक प्रवुद्ध शिक्षक अत्यंत साहसी एवं शिक्षा प्रणाली की दिल की धड़कन की तरह अपनी भूमिका का निर्वाह करता हैं। एक शैक्षिक प्रणाली व छात्रो का विकास, शिक्षक की संवेगात्मक बुद्धि के स्तर पर निर्भर करता हैं।

सांवेगिक बुद्धि एक प्रकार की सामाजिक बुद्धि होती है जो कि सामान्य बुद्धि से भिन्न संप्रत्यय हैं, साथ ही व्यक्ति के जीवन के विभिन्न आयामो में सांवेगिक बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। विभिन्न कार्यस्थलों पर सफल व्यक्तित्व के अध्ययनो से यह तथ्य प्राप्त होते हैं कि व्यक्ति की सफलता में सामान्य बुद्धि की अपेक्षा सांवेगिक बुद्धि के तत्व जैसे, आशावादिता, सांवेगिक संवेदनशीलता एवं सांवेगिक प्रबंधन इत्यादि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गोलमैन के अनुसार ''संवेगात्मक बुद्धि अपनी एवं दूसरो की भावनाओं को पहचानने की क्षमता तथा अपने आपको अभिप्रेरित करके एवं अपने आपको प्रबंधित करने की क्षमता हैं।'' तथा इसी भावनात्मक समझ का प्रयोग कर व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से अच्छी तरह से संवाद कर सकता हैं, साथ ही अपनी कार्यकुशलता में वुद्धि कर सकता हैं। आप अपने कार्य में कितने दक्ष हैं, या अपने कार्य को किस तरह पूरा करते हैं उसमें संवेगो का महत्वपूर्ण योगदान रहता हैं। कार्यस्थल पर कार्यकुशलता में वुद्धि के लिए स्वंय के साथ–साथ अन्य व्यक्तियों के संवेगो का ज्ञान होना आवश्यक हैं। संवेगों को नियंत्रित करके भी अपने कार्यस्थल पर कार्यकुशलता में वुद्धि की जा सकती हैं।

कार्यकुशलता

कार्यकुशलता से तात्पर्य है कार्य करने की क्षमता या कार्यक्षम होने की अवस्था गुण या भाव। कार्यकुशलता एक उत्तम गुण हैं कार्यस्थल पर कार्यकुशल व्यक्ति जितनी अधिक संख्या में होगे वह संस्थान उतनी ही उन्नति करेगा। प्रशिक्षक की कार्यकुशलता को मानसिक व शारिरीक कारण, कार्यस्थल का वातावरण, अन्य व्यक्तियों का व्यक्तित्व तथा वेतनमान प्रभावित करते हैं।

कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य सबंध

दीर्घकाल तक यह विश्वास किया जाता था कि जीवन की सफलता व्यक्ति के संज्ञानात्मक पक्षो पर निर्भर करती हैं जिनका सबंध व्यक्ति की बुद्धि लब्धि से होता हैं। बुद्धि को सर्वप्रमुख स्थान दिया जाता था तथा यह मापा जाता था कि सीखने की क्षमता तार्किक व अभूर्त चिन्तन की योग्यता बेहतर परिणाम दे सकती हैं, लेकिन मनोविज्ञान के क्षैत्र में नवीन विकास ने सफलता व बुद्धि के प्रति सोच में बदलाव किया हैं, अब विश्वास किया जाता है कि बुद्धि लब्धि (IQ) के साथ व्यक्ति के जीवन में भावनात्मक तथा सामाजिक कौशलो की आवश्यकता भी हैं तभी जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती हैं। जिनमें उनके व्यक्तित्व तथा तथा वातावरणीय दोनो प्रकार के कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षकों का बौद्धिक स्तर क्षमता, स्वास्थ्य, संवेग, संसाधन वेतनमान आदि अनेक कारक हैं जो उनकी कार्यकुशलता उपलब्धि को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। आधुनिक शोधो से स्पष्ट होता हैं कि व्यक्ति को अपने जीवन में जो सफलता प्राप्त होती हैं, उसका मात्र 20% ही बुद्धि के कारण होता है और 80% सांवेगिक बुद्धि के कारण होता हैं। गार्डेन के बुद्धिकारक सिद्धांत तथा साल्वे के सांवेगिक बुद्धि के सिद्धांत ने सफलता के निर्धारण में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया हैं। इन विचारको का मानना है कि व्यक्ति की सफलता का अधिकतर श्रेय उसकी सांवेगिक व सामाजिक बुद्धि का जाता हैं। अतः कहा जा सकता है कि कार्यकुशलता सांवेगिक बुद्धि के द्वारा प्रभावित होती हैं। अर्थात् हम अपने संवेगो का नियंत्रण व समन्वय जितना अधिक करेंगे हमारी उत्पादकता उतनी ही बढ़ेगी।

अध्ययन के उद्देश्य

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षकों की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

(1) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षकों की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसबंध नहीं होता हैं।

(2) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुरूष प्रशिक्षकों की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसबंध नहीं होता हैं।

(3) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की महिला प्रशिक्षकों की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं होता हैं।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

राज्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान राजय के कोटा जिले के कोटा शहर के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 200 प्रशिक्षको को यादृच्छिक विधि द्वारा चयनित किया गया हैं।

शोध उपकरण

आंकड़ो के संग्रहण हेतु प्रमाापीकृत डा. शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया हैं। जिसमें निम्न चार आयामो को सम्मिलित किया गया हैं।

(a) स्वजागरूकता
(b) व्यवसायिक उन्नयन आयाम
(c) स्वप्रबंधन/अन्तः वैयक्तिक आयाम
(d) अन्तरवैयक्तिक आयाम

जिसमें प्रत्येक आयाम से सबंधित 200 प्रश्न हैं –

कार्यकुशलता के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया हैं।

जिसमें निम्न आयामो के द्वारा 60 प्रश्न निर्मित किये गये हैं।

(a) समायोजन (b) दबाव नियंत्रण

(c) नेतृत्व क्षमता (d) शारिरीक स्वास्थ्य पर भावनाओं का प्रभाव

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रयुक्त शोध अध्ययन में निर्धारित उद्देश्यो एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं T-test तथा कार्ल पियरसन गुणांक का प्रयोग सहसंबंध ज्ञान करने हेतु किया गया हैं।

प्रदत्तो का विश्लेषण परिणाम एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक–(1)

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्धात्मक अध्ययन

चर		सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
01	02	0.72	सार्थक	उच्च धनात्मक
कार्यकुशलता	सांवेगिक बुद्धि			

उपर्युक्त सारणी (1) से स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.72 प्राप्त हुआ जो कि df = 178 के सार्थकता स्तर पर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना **"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध नहीं होता है"** को अस्वीकृत किया जाता है। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। इसलिए हम कह सकते है कि जिन प्रशिक्षको की सांवेगिक बुद्धि अधिक होती है उनकी कार्यकुशलता भी अधिक होती है।

सारणीक्रमांक–(2)

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के सहसम्बन्धात्मक अध्ययन

चर		सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
01	02	0.76	सार्थक	उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध
कार्यकुशलता	सांवेगिक बुद्धि			

उपर्युक्त सारणी (2) से स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय के पुरूष प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.76 प्राप्त हुआ, जो कि df = 58 के सार्थकता स्तर पर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना **"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुरूष प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है"** को अस्वीकृत किया जाता है। पुरूष प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है। अतः जिन पुरूष प्रशिक्षको की सांवेगिक बुद्धि अधिक होती है कार्यकुशलता उतनी ही अधिक होगी।

सारणीक्रमांक–(3)

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की महिला प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्धात्मक अध्ययन

चर		सहसम्बन्ध गुणांक	सार्थकता स्तर	निष्कर्ष
01	02	0.86	सार्थक	उच्च धनात्मक
कार्यकुशलता	सांवेगिक बुद्धि			

उपर्युक्त सारणी (3) से स्पष्ट होता है कि शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय की महिला प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक 0.86 प्राप्त हुआ, जो कि df = 118 के सार्थकता स्तर पर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना **"शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की महिला प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं होता है"** को अस्वीकृत किया जाता है। महिला प्रशिक्षको की कार्यकुशलता एवं सांवेगिक बुद्धि में अति उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है, इसलिए हम कह सकते है। कि जिन महिला प्रशिक्षको की सांवेगिक बुद्धि अधिक होती है उनकी कार्यकुशलता उतनी ही अधिक होती है।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैं –

(1) शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया। अर्थात् जिन प्रशिक्षकों की सांवेगिक बुद्धि अधिक होती हैं। उनकी कार्यकुशलता भी अधिक होती हैं।

(2) पुरूष प्रशिक्षको की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य धनातमक सहसंबंध पाया गया।

(3) महिला प्रशिक्षको की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के मध्य अति उच्च धनात्मक सहसंबंध पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का आधार तत्व होता हैं जिसकी नेतृत्व क्षमता का परीक्षण प्रायः अनेक अवसरो पर होता रहता हैं। शिक्षक को समाज के लिए एक उदाहरण बनकर भी कार्य करना होता हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षको की कार्यकुशलता व सांवेगिक बुद्धि के में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। संवेगो का सहसबंध सही ढंग से प्रबंधन व नियंत्रण ही संवेगात्मक बुद्धि कहलाता हैं। अतः एक संवेगात्मक प्रबुद्ध शिक्षक वातावरण को सुरक्षित व आरामदायक बना सकता हैं जिससे अधिगम में आसानी रहे। संवेगो को उचित तरह से समझना ओर नियंत्रित करना व्यक्ति की सफलता हेतु अत्यंत आवश्यक हैं। क्योकि सांवेगिक बुद्धि के द्वारा ही व्यक्ति में सबंधो को बनाने तथा सामाजिक कौशल की भावना विकसित होती हैं।

अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षकों को यह सुझाव दिया जा सकता है कि वे अपनी सांवेगिक बुद्धि को भलीभांति समझकर अपनी कार्यकुशलता को प्रभावी बनाने हेतु प्रयासरत रहे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- भटनागर सुरेश (1998) – शिक्षा अनुसंधान विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
- भटनागर सुरेश (1998) – शिक्षा अधिगम प्रक्रिया का विकास आर लाल बुक डिपो, मेरठ
- पाठक पी.डी (2004) – शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन
- कपिल एच के (2002) – अनुसंधान विधियां एच पी मार्ग बुक हाउस, आगरा
- शर्मा आर. ए. (2011) – शिक्षा अनुसंधान आर. लाल. बुक डिपो मेरठ यूपी
- मंगल एस के (2015) शिक्षा मनो. पी.एच. आई. पब्लिकेशन, दिल्ली
- गेलमेन डेनियल (1998) बर्किंग विद इमोशनल इंटेलीजेंस, बेटमैन बुक्स, न्यूयार्क
- www. Htetexam 2018.com
- walker- study on EI of classroom teachers.

- Goleman.D.1996 Emotional intelligence: why it can be matter more than IQ, New York; Bantom books.
- Buch M.B. (1978-83) Third survey of Education sereach, New Delhi, NCERT
- NCERT (1988-92) Fifth survey of Education Research New Delhi, NCERT Vol-II.z

Corresponding Author

* **डॉ. रचना बडोलिया**, *सहायक प्राध्यापक*

एलजेब्रा कॉलेज कोटा, राजस्थान, भारत

****डॉ. अरशी अब्बासी,** *विभागाध्यक्ष*

माँ भारती पी. जी. कॉलेज, कोटा, राजस्थान, भारत

Email-rachnamalav19@gmail.com, Mob.-9468627821